प्रेशर कुकर की सीटी से अब नहीं डरता पल्लव

कोलकाता. 12 वर्षीय पल्लव के साथ उसकी मां भी बेहद खुश है. आज पल्लव को प्रेशर कुकर की सीटी नहीं डराती. वह सीटी बजने पर भी सामान्य रहता है. हालांकि कुछ माह पहले तक ऐसा नहीं था. पल्लव, पूर्वी कमान के दिव्यांगों के आशा स्कूल में पढ़ता है. जब उसकी उम्र चार वर्ष थी, तब उसे आशा स्कूल में ऑटिज्म और हाइपरएक्टिविटी डिसॉर्डर के साथ भरती किया गया था. वह बात तो करता, पर मतलब नहीं निकलता था. उसमें व्यवहारगत समस्या व सोशलाइजेशन की भी दिक्कत थी. स्कूल व उसके अभिभावकों के प्रयास से समस्या काफी हद तक कम हुई. जल्द ही पता चला कि उसे संगीत बेहद पसंद है. सबकुछ ठीक चल रहा था कि एकाएक नयी दिक्कत सामने आयी. कोरोना काल में अन्य स्कूलों की तरह आशा स्कूल भी बंद हो गया. ऑनलाइन कक्षाएं शुरू हुईं. पल्लव बदले हालात में एडजस्ट होने को जूझ ही रहा था कि नयी समस्या खड़ी हो गयी. पल्लव, प्रेशर कुकर की सीटी को बिल्कुल सह नहीं पाता था. स्कूल के ऑक्युपेशनल थेरेपिस्ट के साथ बातचीत में पता चला कि यह समस्या तब से है, जब पल्लव पांच-छह वर्ष का था. प्रेशर कुकर की सीटी सुनते ही वह अपने कान हाथ से बंद कर लेता, चीखता और कई बार खुद को चोट भी पहुंचाता था. पल्लव की मां, उसके स्कूल जाने के बाद खाना बनाती

थी या फिर उसके पिता उसे घर से बाहर ले जाते थे, तब जाकर प्रेशर कुकर घर में इस्तेमाल हो पाता था. इन कदमों से समस्या घटी थी. पर कोरोना काल में जब वह पूरी तरह घर में रहा, तब प्रेशर कुकर की सीटी सुनाई पड़ने लगी. कई बार उसकी हरकतें चरम पर पहुंच जातीं. ऑक्युपेशनल थेरेपिस्ट के पास ले जाने पर विशेषज्ञ ने उसकी समस्या की गंभीरता को समझा. पल्लव की मां को थेरेपिस्ट ने छोटे-छोटे उपाय बताये, जिन्हें अपनाने के बाद उनके लाल की समस्या पूरी तरह गायब हो गयी. कोरोना काल ने सभी का जीवन बदला है. पर दिव्यांगों के लिए असुरक्षा की भावना भी पैदा की है. हालांकि पल्लव के लिए कोरोना काल एक विकट समस्या से उबारने वाला समय रहा.

प्रभात खबर
Sat, 28 November 2020
https://epaper.prabhatkhabar.com/c/

आशा स्कूल हवा के ताजे झोंके के समान था सुमित के लिए

आनंद कुमार सिंह ▷ कोलकाता

फोर्ट विलियम में आशा स्कूल में पढ़ने वाला सुमित सरकार अपने पसंदीदा विषय इलेक्ट्रॉनिक्स का अब प्रैक्टिकल भी करता है. अपने घर में चाहे नये ट्यूब लाइट्स की वायरिंग हो या फिर एलइडी बल्ब लगाना हो, वो उसे आसानी से कर सकता है. यू ट्यूब तथा सोशल मीडिया के जरिये उसने सबकुछ सीखा है. आठ वर्षीय सुमित के लिए यह सबकुछ करना आसान नहीं था. सुमित की मां सुमोना सरकार कहती हैं कि उनका बेटा जब पैदा हुआ था तो बिल्कुल सामान्य था. जब उसकी उम्र छह वर्ष की हुई तो उसमें माइल्ड ऑटिज्म और ऐसपरगर सिंड्रोम पाया गया. ऑटिज्म में सामाजिक स्किल्स में कठिनाई देखी जाती है. बर्ताव भी पुनरावृत्ति (रिपीटिटिव) वाला हो जाता है. कई बार पीड़ित अपनी तकलीफ या जरूरत बता नहीं पाता. बतौर अभिभावक वह और उनके पति मिहिर सरकार पर मानों बिजली टूट पड़ी थी. उन्हें यह स्वीकार करने में काफी वक्त लगा कि उनकी एकमात्र संतान को कुछ मुश्किलें हैं. लेकिन उन्होंने आने वाली चुनौतियों का सामना किया. अब तक सुमित मुख्यधारा के स्कूल में पढ़ रहा था और उसे वहां कठिनाई आ रही थी. एक दिन उन्हें पता चला कि उनके बेटे को उसके सहपाठी 'बुली' (धमकाना/धौंस देना) करते हैं. यह जान कर वह टूट से गये. इसके बाद उन्होंने सुमित को स्पेशल स्कूल में शिफ्ट करने का फैसला किया.

●बाकी पेज 07 पर

खिल रहा बचपन

आज क्लास का मॉनिटर है सुमित

आशा स्कूल, कोलकाता की प्रिंसिपल सुदेशना बसु कहती हैं कि सुमित ने 2014 में स्कूल में दाखिला लिया था. उसके पिता मर्चेंट नेवी में हैं. शुरुआत में सुमित में आत्मविश्वास की कमी देखी जाती थी. आज वह क्लास का मॉनिटर है. पढ़ाई में भी अच्छा हो गया है.

ऑटिज्म से करीब 18 हजार पीड़ित

नेशनल इंस्टिट्यूट फॉर मेंटली हैंडिकैप्ड के मुताबिक पश्चिम बंगाल में वर्तमान में करीब 18 हजार लोग ऑटिज्म से पीड़ित हैं. इनमें बच्चों से लेकर बड़े तक शामिल हैं. विभिन्न पैरामीटर्स की जांच के बाद उन्हें ऑटिज्म से पीड़ित बताया जाता है. ऐसे करीब 1000 ऐसे मामले हैं जिनमें यह फैसला लिया जाना बाकी है कि पीड़ित ऑटिज्म से भुगत रहा है या नहीं. ऑटिज्म के क्षेत्र में काम करने वाले डॉ प्रणव मल्लिक कहते हैं कि यह धारणा गलत है कि ऑटिज्म को ठीक नहीं किया जा सकता.

प्रभात खबर
Fri, 18 December 2020
https://epaper.prabhatkhabar.com/c/57114726

যোগ দিলেন মা-বাবারাও

আজকালের প্রতিবেদন

শিশুদের সঙ্গে এগিয়ে এলেন তাদের বাবা-মা। তাদের সঙ্গে যোগ দিলেন হাতের কাজের কর্মশালায়, গাইলেন গান, রান্না করলেন, সন্তানদের শেখালেন রান্নার বিভিন্ন পদ্ধতি। নতুন রূপে তুলে ধরা সব কিছুই হয়ে উঠল আকর্ষণীয়। খুশি শিশুরা, খুশি তাদের অভিভাবকরা। লকডাউন পরিস্থিতিতে ঘরবন্দি বিশেষভাবে সক্ষম শিশুদের মানসিক সমস্যার সমাধানে নতুন এই পদ্ধতি খুবই কাজে লেগেছে বলে জানিয়েছে পূর্বাঞ্চলীয় সেনাবাহিনীর আশা স্কুল। এটি আর্মি ওয়াইভস ওয়েলফেয়ার অ্যাসোসিয়েশনের একটি প্রকল্প। কলকাতায় ১৯৯২ সালে তৈরি আশা স্কুল সেনা পরিবারের সঙ্গে সাধারণ পরিবারের বিশেষভাবে সক্ষম শিশুদের উন্নতিতে কাজ করে যাচ্ছে।

দেশে লকডাউন শুরু হওয়ার পর এই স্কুলও বন্ধ রাখা হয়। চালু হয় অনলাইন ক্লাস। কিন্তু অনলাইন ব্যবস্থা বিশেষভাবে সক্ষম শিশুদের মনোযোগ আকর্ষণ

বিশেষভাবে সক্ষম পড়ুয়ার অনুষ্ঠান। ছবি: আজকাল

করতে পারেনি। ফলে নতুন কিছু শেখানোটা একটা সমস্যা হয়ে দাঁড়াচ্ছিল। যার জন্য শিশুদের মধ্যে একটা অস্থিরতাও বাড়ছিল। অভিভাবকদের মধ্যেও অবসাদ তৈরি হচ্ছিল। এরপরেই স্কুল কর্তৃপক্ষ নতুন এই ব্যবস্থা নিয়ে আসেন। যা শিশুদের মনোরঞ্জনের সহায়ক হয়। এর আগে অভিভাবকরা শিশুদের এই কাজে শুধুমাত্র সাহায্য করতেন বা দেখাশোনা করতেন। এবার তাঁদের সন্তানদের সঙ্গে তাঁরাও পা মেলালেন। যোগ দিয়েছিলেন এই শিশুদের ভাই-বোনেরাও। শিশুদের কাছে এই পদ্ধতি হয়ে উঠেছে উপভোগ্য। কমছে অস্থিরতা। ফলে তাদের ও তাদের পরিবারের সঙ্গে খুশি শিক্ষকরাও।

OVERNMENT OF WEST BENGAL
TENDER NOTICE
IIT-12/B.Ar.D. & NIQ-12/B.Ar.D. of 2020-21
aled Tender is invited by the Executive
gineer, Barasat Arsenic Division, PHE
e. Details information about the
nder will be available in the website:
ww.wbphed.gov.in as well as in the
ice notice board. Sd/- Executive
gineer, Barasat Arsenic Division,
.E Dte.
- T7042(4)/2020

GOVERNMENT OF WEST BENGAL